राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–**pr.rajbhavan@gmail.com**
prrajbhavanbihar@gmail.com
मोबाईल–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

महामहिम राज्यपाल ने डॉ॰ जे॰पी॰ सिंह लिखित तीन किताबों को लोकार्पित किया

पटना, 08 अप्रैल 2019

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने आज राजभवन में पटना विश्वविद्यालय के पूर्व प्रतिकुलपति तथा उच्च शिक्षा के पूर्व निदेशक डॉ॰ जे॰पी॰ सिंह लिखित तीन पुस्तकों –''महाभारत एवं श्रीमद्भगवद्गीता –धर्म का समाज शास्त्रीय निरूपण'', ''संक्षिप्त श्रीमद्भगवद्गीता'' तथा ''Comprehensive Srimad Bhagavad Geeta''को लोकार्पित किया।

उक्त अवसर पर बोलते हुए राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि 'महाभारत' और 'रामायण' भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि ग्रंथ हैं। उन्होंने कहा कि 'श्रीमद्भगवद्गीता' भी भारतीय संस्कृति का एक ऐसा मर्यादा ग्रंथ है, जो कर्म के पथ पर चलकर कठिन–से–कठिन लक्ष्य हासिल करने की हमें प्रेरणा देता है।

उन्होंने कहा कि 'श्रीमद्भगवद्गीता' की लगभग सभी भारतीय भाषाओं और विश्व की भी लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में अनुवादित होने के तथ्य के जरिये इसकी लोकप्रियता और प्रासंगिकता के सर्वदा अक्षुण्ण बने रहने की बात कही।

राज्यपाल ने कहा कि 'श्रीमद्भगवद्गीता का सार्वभौमिक और सार्वकालिक महत्व है। यह सद्ग्रंथ हमें ज्ञान, कर्म, प्रेम, योग और सद्भावना की अनुपम शिक्षा देता है। राज्यपाल ने कहा कि भारत की आध्यात्मिक चेतना के कई पहलू आज वैज्ञानिक विकास के दौर में भी काफी महत्वपूर्ण बने हुए हैं। भारतीय संस्कृति के कई अवयव वैज्ञानिकता के मानदंडों पर भी खरे उतरे हैं। उन्होंने भगवान श्रीराम के समय में बने 'रामसेतु' की ऐतिहासिकता ''नासा' द्वारा बताये जाने का संदर्भ उद्धृत करते हुए कहा कि हमारी ऐतिहासिक विरासतें आज के वैज्ञानिक युग में भी सही प्रमाणित हुई हैं। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद, योग आदि की महत्ता आज पूरा विश्व स्वीकारता है।

राज्यपाल ने कहा कि 'श्रीमद्भगवद्गीता' की हजारों टीकाएँ और भाष्य विभिन्न भाषा–भाषियों का पूरे विश्व में ज्ञान अभिवर्द्धित कर रहे हैं। इस क्रम में उन्होंने मनु शर्मा की पुस्तक 'कृष्ण की आत्मकथा' के विभिन्न खंडों का उल्लेख करते हुए इसे कृष्ण–कथा का अनुपम ग्रंथ बताया।

राज्यपाल ने कहा कि 'महाभारत' के संदर्भ में 'यन्न भारते तन्न भारते' की उक्ति प्रचलित है। अर्थात् जो 'महाभारत' में नही है, वह भारत में नही है।' –यानि भारत का सबकुछ 'महाभारत' में समाहित है। उन्होंने कहा कि यह ग्रंथ संपूर्ण मानवता के लिए एक दिव्य उपहार है।

राज्यपाल ने 'महाभारत' एवं श्रीमद्भगवद्गीता पर हिन्दी एवं अंग्रेजी में ग्रंथ–लेखन के लिए डॉ॰ जे॰पी॰ सिंह को बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए उनके लेखन की समग्र सफलता की कामना की। राज्यपाल ने कहा कि इन ग्रंथों का समाजशास्त्रीय अध्ययन काफी उपयोगी सिद्ध होगा।

इस अवसर पर पुस्तकों के लेखक डॉ॰ जे॰पी॰ सिंह ने कहा कि ''श्रीमद्भगवद्गीता' में प्रतिपादित जीवन–दर्शन पूरी मानवता का पथ–प्रदर्शक है। पुस्तक लोकार्पण के अवसर पर प्रो॰सतीश कुमार, प्रो॰ समीर कुमार शर्मा, प्रो॰ रामरतन सिंह तथा प्रो॰ संगीत कुमार आदि भी उपस्थित थे।

.....